असार संसार

तर्ज़ – नगरी – नगरी द्वारे – द्वारे ... ...

दुनियां में फंस जाना नाहीं, यह जीवन दिन चार है।
सोच समझ कर सौदा करना, धोखे का बाज़ार है।। टेक।।

उस प्रभु की रचना को, क्यों झूठो – झूठ बताते हो।
रचना में फिर अपनी रचना, रच – रचकर दु : ख पाते हो।।
तुम भी उसके यह भी उसके, फिर कैसा हंकार है , दुनियां ... ...

हाड़ मास के पुतले अंदर, अपना मुख निहार ले।।
गुरु वचनों की सीढ़ी चढ़कर, अपना आप विचार ले।।
तेरे घर की रचना न्यारी, जगमग जोत अपार है , दुनियां ... ...

तूं तो वासी और नगर, आए फंसा परदेस में।
काला गोरा , बच्चा – बूढ़ा, इस कपड़े के भेष में।।
पंच भूतों से नज़र उठाले, फिर तो मौज बहार है , दुनियां ... ...

ज़ात पिता की जो सो तेरी, तूं उसका वोह तेरा है।
न जाने किस वहम ने, " दासनदास " तुझको घेरा है।।
प्रीत राख गुरु चरणों में, बस ग्रंथों का यह सार है, दुनियां ... ...